



प्रेस विज्ञप्ति

'भाषाई सदभाव दिवस' के अवसर पर बहुभाषी कविता पाठ

हमने चाँद धीमी आँच पर रखा हुआ है – रिंद
सुख के दरवाज़ों पर दुख है पहरेदार – अनुपम कुमार
उसे मेरी चुप समझ न आई तो मैंने एक गीत छेड़ा – गगनदीप शर्मा

नई दिल्ली, 21 नवंबर 2018 : साहित्य अकादेमी द्वारा 'भाषाई सदभाव दिवस' के अवसर पर अकादेमी सभाकक्ष में बहुभाषी कविता पाठ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आठ भाषाओं के कवियों ने अपनी कविताएँ मूल भाषा के साथ-साथ हिंदी अथवा अंग्रेजी अनुवाद में सुनाई। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेन्द्र कुमार देवेश ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि भाषाओं और उनके साहित्य में शब्द-संपदा तथा साहित्य-संवेदना के आदान-प्रदान से सदभाव के जिस परिदृश्य का निर्माण होता है, उसके लिए अकादेमी आरंभ से सतत प्रयत्नशील रही है।

प्रतिभागी कवियों में अनुपम कुमार (असमिया), तृणा चक्रवर्ती (बाङ्ला), गगनदीप शर्मा (पंजाबी), सत्या अशोकन (तमिळ), राजेंद्र मेहता (गुजराती), यशोदा मुर्मु (संताली), दिविक रमेश (हिंदी) एवं पी. पी. श्रीवास्तव 'रिंद' (उर्दू) शामिल थे। पंजाबी, गुजराती एवं उर्दू के कवियों ने गजल, रूबाई तथा मुक्त छंद की कविताएँ सुनाई, वहीं अन्य कवियों ने मुक्त छंद में अपनी कविताओं का पाठ किया। सत्या अशोकन की कविताएँ नारी संवेदना पर विशेष रूप से केंद्रित थीं, वहीं यशोदा मुर्मु की कविता में किसान एवं आदिवासी जीवन त्रासदी को रेखांकित किया गया था। दिविक रमेश ने कश्मीर से विस्थापन की वेदना पर आधारित अपनी कविता का पाठ श्रोताओं के विशेष आग्रह पर किया।

कार्यक्रम में विभिन्न भाषाओं के लेखक एवं साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति रही, जिनमें प्रमुख थे – राजेंद्र प्रसाद मिश्र (ओड़िशा), रजिया (अंडमान), संतोष श्रेयांस (चेन्नै), मोहन हिमथाणी, विज्ञान व्रत, राधेश्याम तिवारी, सोमदत्त शर्मा एवं अवधेश कुमार सिंह।

के. श्रीनिवासराम